खेल की दुनिया में डोपिंग की समस्या

नरेन्द्र देवांगन

शोएब अख्तर और मोहम्मद आसिफ दो पाकिस्तानी क्रिकेटरों को पिछले साल भारत में होने वाली आईसीसी चैंपियन्स ट्राफी शुरू होने से पहले ही स्वदेश लौटना पड़ा था और फिर उनके खेलने पर प्रतिबंध का फैसला आया था। इसकी वजह यह थी कि उन पर डोपिंग के आरोप सही पाए गए थे। उन्होंने नैण्ड्रोलोन नामक स्टीरॉइड का सेवन किया था। इनका डोपिंग टेस्ट पॉज़ीटिव पाया गया।

खेलों में जैसे-जैसे ग्लैमर और पैसे की वृद्धि हुई है, वैसे-वैसे बेईमानी और धोखाधड़ी भी बढ़ती जा रही है। खिलाड़ी जीतने की इच्छा मन में रखकर प्रतिस्पर्धी से आगे बढ़ने की फिराक में रहते हैं। इसके लिए चाहे उन्हें कोई भी रास्ता क्यों न अपनाना पड़े। यूं तो लगभग सभी खेलों के खिलाड़ी प्रतिबंधित दवाओं का सेवन करते रहे हैं परंतु जिन खेलों में अधिक दमखम की आवश्यकता होती है उनमें इनका ज़्यादा प्रयोग किया जाता है। जैसे एथलेटिक्स, भारोत्तोलन, बॉक्सिंग, साइकिल दौड़ या क्रिकेट में तेज़ गेंदबाज़ी आदि।

1988 के ओलंपिक में कनाडा के धावक बेन जॉनसन का मामला सनसनीखेज़ रहा था। मेरियन जोन्स, टिमोंट गोमरी, क्लायड लैंडर्स, मेराडोना, शेन वार्न, सीमा आंतिल, इयान बॉथम आदि कुछ ऐसे नाम हैं जिन्होंने अपने-अपने देश का नाम तो नीचा किया ही, खेल प्रेमियों को भी छला।

डोपिंग का पहला कारण होता है खेलों में कड़ा परिश्रम व थकान। दूसरा कारण येन केन प्रकारेण शीर्ष पर पहुंचना होता है। कड़े अभ्यास के पश्चात खिलाड़ी थक जाता है। शरीर में पोषक तत्वों और ऑक्सीजन की आपूर्ति घट जाती है जिससे थकान महसूस होती है। थकान खिलाड़ी की दुश्मन होती है। शरीर एक सीमा तक ही पोषक तत्वों की आपूर्ति कर पाता है। मेहनत के समय अतिरिक्त मांग को पूरा करने और ऊर्जा स्तर को बनाए रखने के लिए खिलाड़ी रासायनिक पदार्थों का उपयोग करना शुरू कर देते हैं। कई खिलाड़ी शारीरिक क्षमता में तत्काल वृद्धि के लिए भी इनका सेवन करते हैं। नेन्ड्रोलोन ऐसा ही पदार्थ है। अक्सर फर्राटा धावक, साइक्लिस्ट व भारोत्तोलक इसका इस्तेमाल करते हैं।

विश्व डोपिंग रोधी एजेंसी (वाडा) की स्थापना 1999 में की गई थी। वाडा ने एक कोड ईजाद किया हुआ है। यह डोपिंग से सम्बंधित अनेक जानकारियां उपलब्ध कराता है। बीमार खिलाड़ियों के लिए छूट का प्रावधान भी है। वाडा कोड का अनुमोदन लगभग 100 देशों ने कर दिया है। वाडा डोपिंग में पकड़े जाने वाले खिलाड़ियों के लिए कठोर दंड का प्रावधान करती है।

अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक संघ द्वारा प्रतिबंधित दवाओं को 5 वर्गो में विभाजित किया गया है।

1. एनाबोलिक स्टीरॉइड्स
2. पेप्टाइड हार्मोन्स
3. दर्द निवारक
4. स्फूर्तिदायक
5. मूत्रवर्धक

डोप परीक्षण में खिलाड़ियों के खून और पेशाब के नमूने लिए जाते हैं और प्रतिबंधित रसायनों की जांच की जाती है। अंतर्राष्ट्रीय खेल परिषद ने डोपिंग के अंतर्गत जिन क्रियाओं को खास तौर पर रखा है वे इस प्रकार हैं :

1. प्रतिबंधित दवाओं का सेवन।
2. ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाने के लिए बाहरी रक्त लेना।

3. टेस्ट को पॉज़ीटिव आने से रोकने हेतु दवाओं का सेवन करना।

खिलाड़ियों द्वारा शक्तिवर्धक दवाओं के सेवन का इतिहास बहुत पुराना है। ऐसे प्रमाण भी मिले हैं जिनसे पता चलता है कि ईसा से 300 साल पहले भी यूनान के खिलाड़ी अपना शारीरिक दमखम बढ़ाने के लिए मशरूम का इस्तेमाल करते थे। 19वीं शताब्दी में भी इस प्रकार के पदार्थों के सेवन में वृद्धि हुई। परंतु आधुनिक समय में तो प्रतिबंधित दवा लेना एक फैशन-सा बन गया है। प्रतिबंधित पदार्थों का प्रयोग धड़ल्ले से किया जा रहा है। स्टीरॉइड्स का प्रयोग सबसे ज़्यादा चलन में है। स्टीरॉइड्स शरीर की क्षमता में अप्रत्याशित रूप से वृद्धि करते हैं। ये थकान दूर करने में भी सहायक होते हैं। स्फूर्तिदायक पदार्थ हृदय गति को बढ़ाकर प्रदर्शन में सुधार करते हैं। मूत्रवर्धक पदार्थ शरीर से द्रवों को बाहर निकालते हैं। यह वज़न कम करने में सहायक होता है। जहां खिलाड़ियों के लिए अनेक पदार्थ प्रतिबंधित हैं वहीं अमीनो एसिड आधारित कुछ पदार्थ जैसे ग्लूटामाइन, ट्रिप्टोथेन, प्रोटीन चूर्ण लेने की आज़ादी है। ये पदार्थ शरीर की थकान दूर कर मांसपेशियां मज़बूत बनाते हैं और प्रतिरक्षा तंत्र को मज़बूत करते हैं।

विभिन्न रसायनों की अधिकतम सीमा

रसायन	मात्रा प्रति मि.ली.
नेन्ड्रोलोन	2 नैनोग्राम (पुरुष)
	5 नैनोग्राम (स्त्री)
19 नॉरएंड्रोस्टेरोन	12 नैनोग्राम (पुरुष)
	5 नैनोग्राम (स्त्री)
कॉर्बोक्सी टी.एस.सी.	15 नैनोग्राम
इपी टेस्टोस्टेरोन	200 नैनोग्राम
साल्बूटेमोल	500 नैनोग्राम
मॉर्फीन	1 माइक्रोग्राम
एफेड्रीन	5 माइक्रोग्राम
मेथिल एफेड्रीन	10 माइक्रोग्राम
कैफीन	12 माइक्रोग्राम
स्यूडोएफेड्रीन	25 माइक्रोग्राम
फिनाइल प्रोपेलेमीन	25 माइक्रोग्राम

प्रतिबंधित दवाएं शरीर को हानि भी पहुंचाती हैं। गुर्दे, हृदय, यकृत, श्वसन तंत्र व तंत्रिका तंत्र सर्वाधिक प्रभावित होते हैं। बुखार, अनिद्रा, घबराहट, निर्जलीकरण, मांसपेशियों की ऐंठन प्रमुख लक्षण हैं। ***(स्रोत विशेष फीचर्स)***

अगले अंक में

स्रोत अप्रैल 2008
अंक 231

- **मछलियां भी फैलाती हैं बीज**
- **क्यों मर रहे हैं चंबल के घड़ियाल?**
- **बुद्धिमत्ता के जीन्स की तलाश**
- **चीनी मिल के कचरे से बायो गैस**
- **पिता ध्यान दे, तो बच्चे तंदुरुस्त**